पापा मम्मी की दूसरी सुहागरात -7

"धक्के लगाते लगाते पापा को पता नहीं क्या सूझा, अपना चुम्बन तोड़ा, मम्मी के चेहरे की ओर देखकर मुस्कुरा कर बोले- सुरभि, एक बात बताओ, जब अंदर जाता हैं जो पता चलता है ? मम्मी मुस्कुराई और बोली- मुझे नहीं मालूम ! ..."

Story By: राहुल साहू (vish4084)
Posted: Thursday, September 24th, 2015
Categories: कोई देख रहा है
Online version: पापा मम्मी की दूसरी सुहागरात -7

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

पापा मम्मी की दूसरी सुहागरात -7

अब एक तरफ तो पापा धीरे धीरे धक्के लगा रहे थे और उनके दोनों हाथ अब कभी मम्मी के अमृत कलशों पर, कभी कमर पर, कभी पीठ पर चल रहे थे और उनके होंठ मम्मी के होंठों से चिपके हुए थे, कभी पापा के होंठ मम्मी के गालों पर फिसल जाते तो कभी गर्दन पर और कभी गर्दन के पीछे वाले भाग पर, कभी कानों पर आ जाते तो कभी कंधों पर तो कभी मम्मी की छाती पर आकर लगातार अपना काम किये जा रहे थे, जिससे पूरे कमरे में पुच पुच की आवाज आ रही थी।
मम्मी भी पापा का पूरा साथ दे रही थी।

मैंने एक बात ध्यान दी कि जब पापा धक्के लगाते और पापा का वो (मुन्ना या लण्ड) मम्मी की उसमें (लाडो,मुनिया या चूत) में प्रवेश करता या घुसता तो हल्की हल्की कुच कुच कुच... की लयबद्ध ध्वनि सुनाई पड़ रही थी। यह आवाज वैसे ही थी जैसे किसी बेहद पतली नाली से धीरे धीरे लेकिन लगातार पानी के रिसने की आवाज निकलती है।
शायद मम्मी की मुनिया लगातार रतिरस छोड़ रही थी जिस कारण वो बेहद गीली और चिकनी थी, शायद इसीलिए ही जब पापा अपना मुन्ना मम्मी की मुनिया अंदर बाहर कर रहे थे तो कुच कुच कुच की आवाज निकल रही थी।

धक्के लगाते लगाते पापा को पता नहीं क्या सूझा, अपना चुम्बन तोड़ा, मम्मी के चेहरे की ओर देखकर मुस्कुरा कर बोले- सुरभि, एक बात बताओ, जब अंदर जाता हैं जो पता चलता है?
मम्मी मुस्कुराई और बोली- मुझे नहीं मालूम!
पापा बोले- ओ हो सुरभि !तुम तो ऐसे बोल रही हो जैसे कि तुम बहुत नादान हो कुछ जानती ही नहीं।

हालांकि पापा ने धक्के मारने बंद नहीं किए थे पर धक्के मारते मारते बीच बीच में रुक जरूर जाते थे जिससे कि वो जल्दी झड़े नहीं।
पापा फिर बोले- बताओ न सुरभि, पता चलता है क्या ?
मम्मी धीरे से बोली- हाँ, पता चलता है।
पापा फिर बोले- और जब माल गिरता है उसमें तो ?
मम्मी बोली- हटो परे, तुम भी न, बहुत वो हो !
पापा बोले- बताओ न जी, कैसा लगता है जब गिरता है ?
मम्मी बोलीं- ऐसा लगता है जैसे किसी ने हल्का गुनगुना चावल का मांड अंदर भर दिया हो।

मम्मी की बातें सुनकर पापा शायद जोश में आ गए और दो तीन जोरदार धक्के घपा घपा लगा डाले, फिर 1 मिनट के लिए रुके, पर अपना खूँटा (मुन्ने या लंड) मम्मी की लाडो में ही गाड़ सा दिया और उसमें से निकाला नहीं और मम्मी के शरीर से चिपक गए और मम्मी की पीठ पर पापा के हाथ एकदम कस से गए और पापा की छाती मम्मी की चूचियों से एकदम चिपक सी गई।

शायद वो झड़ने वाले थे, इसलिए अपने आप को झड़ने से रोकने के लिए उन्होंने ऐसा किया था।
'अंकित के पापा धक्के मारते मारते रुक क्यों जाते हो ?' मम्मी बोली- जल्दी से कर वर के छुट्टी करो।
पापा बोले- सुहागरात में भी जल्दी मचा रखी है तुमने तो !
पापा मम्मी एक दूसरे के शरीर से चिपके हुए धीरे धीरे ये बातें कर रहे थे।

अब पापा कुछ नीचे सरके, मैं समझ गया कि अब वो क्या करने वाले हैं।
पापा बोले- सुरभि लाओ जरा तुम्हारे मम्मों से तो खेल लूँ।

मम्मी बोली- इतनी देर से तो खेल रहे हो जी, तुम्हारा तो कभी दिल ही नहीं भरता इनसे !
पापा बोले- ये साले हैं ही इतने खूबसूरत कि जो भी देख ले, इन्हें उनकी नियत ख़राब हो जाये।

अब पापा का एक हाथ मम्मी के बाएँ दुग्ध कलश पर चल रहा था और दाहिने को लगातार चूस रहे थे कभी पापा मम्मी की चूचियों को सहलाते तो कभी चूचियों की भूरी भूरी घुंडियों को अपनी उंगलियों से मसल देते जिससे मम्मी की सिसकारी निकल जाती।
पापा और मम्मी एक दूसरे की आँखों में लगातार टकटकी बांधे देखे जा रहे थे, उनकी आँखें और चेहरे की मुस्कराहट ही उनके प्यार को बयाँ करने को काफी थी।

अब वो एक तरफ मम्मी की अमृत कलशों से खेल रहे थे तो दूसरी तरफ वो बहुत ही मज़े से धीरे धीरे धक्के लगा रहे थे और साथ मम्मी के होंठो को हल्के हल्के काटते हुए बेतहाशा चूस रहे थे।
धीरे धीरे करने से उन दोनों (मम्मी और पापा) को मज़ा भी बहुत आ रहा था।
यह कहानी आप अन्तर्वासना डॉट कॉम पर पढ़ रहे हैं !

मैंने ध्यान दिया कि धक्के मारते समय बीच बीच में मम्मी और पापा दोनों के ही मुंह से अब सिसकारियाँ कुछ ज्यादा ही निकल रही थी।
शायद जब पापा का लिंग मम्मी की मुनिया की दीवार से रगड़ खाता तो उन दोनों की सिसकारी निकल जाती थी।
यह सारे दृश्य देख कर मेरी तो हालत ही ख़राब हो गई।

अब मम्मी ने अपने पैर थोड़े ऊपर उठा कर पापा की कमर से लपेट लिए, ऐसा करने से मम्मी के नितम्ब थोड़े ऊपर हो गए, अब पापा ने मम्मी के गोल और कसे हुए नितम्बों पर भी हाथ फिराना चालू कर दिया।
मुझे लगा जैसे कुछ पानी सा मम्मी की लाडो से निकल रहा है, बहुत ज्यादा नहीं, पर हाँ

उनकी लाडो के दोनों मखमली गद्दीदार कपाट कुछ भीगे से लग रहे थे जो इस बात की पुष्टि कर रहे थे कि उनकी लाडो लागातार पानी छोड़ रही है और उन्हें उसके निकलने से शायद कुछ गुदगुदी सी होने लगी थी।

अब पापा ने धक्कों की गति कुछ बढ़ा दी थी, उनका हाथ मम्मी के अमृत कलशों को मसलने में लगा पड़ा था, कभी वो उसके शिखरोंको मसलते, कभी उन्हें मुँह में लेकर चूम लेते कभी दांतों से दबा देते।
मम्मी का तो जैसे रोम रोम पुलकित होने लगा था, उनका पूरा शरीर रोमांचित हो रहा था।
मुझे लगा कि जैसे मम्मी सारी देह तरंगित सी होने लगी है और और उन्होंने अपनी आँखें मूँद सी ली, उनके मुँह से बस हल्की हल्की सिसकारियाँ ही निकल रही थी- आह.... आह... आह...आह...

मम्मी ने अपने पैर थोड़े से और खोल दिए और अपने पैरों को हवा में ही चौड़ा कर दिया ताकि पापा को किसी प्रकार की कोई परेशानी ना हो।
ओह...
मम्मी के ऐसा करने से मम्मी के पांवों में पहनी हुई निगोड़ी पायल रुनझुन रुनझुन की मंद मंद ध्वनि सी करने लगी, लयबद्ध धक्कों के साथ पायल और चूड़ियों की झंकार सुनकर पापा और भी रोमांचित से होने लगे और मम्मी जोर जोर से चूमने लगे।

दो ध्वनि और भी आ रही थी एक थी चुर चुर चुर चुर... जो तेज़ धक्के लगाने के कारण पुराने बेड के हिलने से आ रही थी और दूसरी थी- थप थप थप थप...
जो पापा के अखरोटों और मम्मी की लाडो के बार बार टकराव से उत्पन हो रही थी।
क्योंकि अब पापा ने धक्को की गति बढ़ा दी थी इसलिए मम्मी की लाडो से आने वाली कुच कुच कुच... की आवाज जैसे कहीं गायब सी हो गई थी या इन सारी आवाजो में कहीं गुम सी हो गई थी।

मम्मी का रोमांच और स्पंदन अब अपने चरम पर था, मम्मी की साँसें अब उखड़ने लगी थी और पूरी देह अकड़ने लगी थी। मम्मी ने पापा के होंठों को अपने मुँह में कस लिया और अपनी बाहों को उनकी कमर पर जोर से कस लिया और मम्मी की प्रेम रस में डूबी सीत्कार निकालने लगी थी।
मुझे लगा कि आज मम्मी तो जैसे लाज के सारे बंधन ही तोड़ देंगी।

पापा का भी यही हाल था, वो अब जल्दी जल्दी धक्के लगाने लगे थे, उनकी साँसें और दिल की धड़कन भी बहुत तेज़ होने लगी थी और चहरे का रंग लाल सा हो चुका था। वो भी अब मम्मी को जोर जोर से चूमे जा रहे थे मम्मी के उरोजों को मसले जा रहे थे- मेरी जान आह... या...

मम्मी के मुख से अचानक कुछ सीत्कार सी निकली और मम्मी बोली- अंकित के पापा, मैं बस होने ही वाली हूँ!
मम्मी के पूरे शरीर में सिहरन सी उत्पन हो गई और वो तो जैसे छटपटाने सी लगी थी। अचानक मम्मी ने पापा के होंठों को इतना जोर से चूसा कि मुझे लगा कि उनमें तो खून ही निकल आएगा, मम्मी ने उन्हें इतना जोर से अपनी बाहों में भींचा कि उनकी कलाइयों में पहनी चूड़ियाँ ही चटक गई और मुझे लगा कि मेरी मम्मी आनन्द के परम शिखर पर पहुँच गई हैं, वो कितनी देर प्रकृति से लड़ती, मम्मी का रति रस अंततः छूट ही गया।

कहानी आगे जारी है...
मेरी कहानी आपको कैसी लगी, मुझे जरूर बतायें।
vish4084@gmail.com